

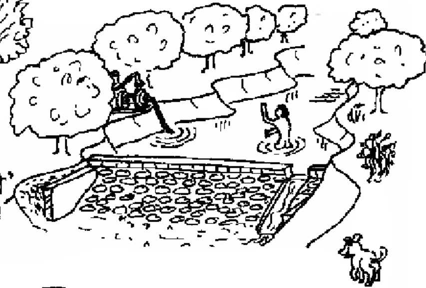
पानी
बचाइये
सूखा
पड़ रहा है
भादों 1987

बंधा

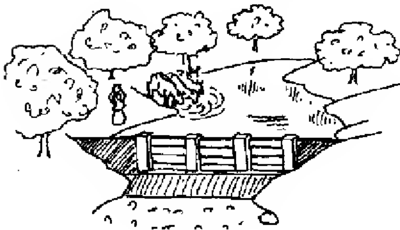
जहाँ नाले में पानी की अच्छी आवक हो या जमीन कट रही हो ।



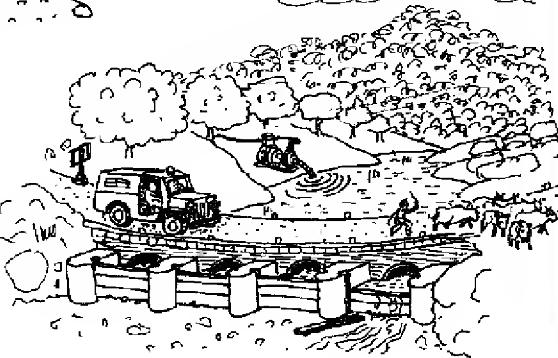
लोहे की जाली से रुकी हुई मिट्टी और टहनियों का बंधा । इसे बनाइये - पानी और मिट्टी दोनों बचेंगे ।



पत्थर और मिट्टी का बंधा जो 'गली' नियंत्रण करता है।



सीमेंट का चेक डैम बनाइये । पशुओं को पानी मिलेगा ।

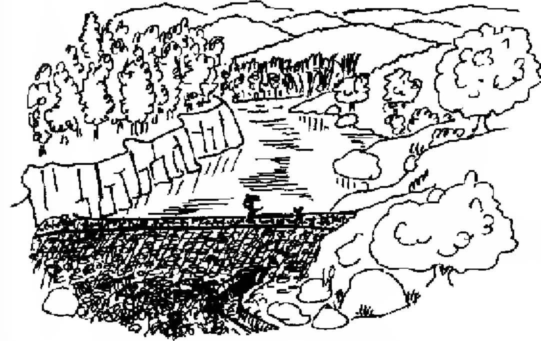


स्टैप डैम । देखिये इसके कितने उपयोग हैं ।

बाँध

जहाँ बड़े नाले में पानी की अच्छी आवक हो ।





यह जगह बाँध बनाने के लिये अच्छी है ।



बाँध कहाँ बनाना चाहिये ?

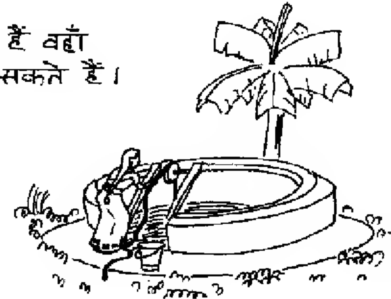
1. नाले में पर्याप्त पानी होना चाहिये ।
2. छोटे से छोटा बाँध ज्यादा से ज़्यादा पानी दे ।
3. नींव मजबूत और पत्थर की हो ।
4. बाँध बनाने के लिये पत्थर मिट्टी पास में ही हो ।
5. सिंचाई के लिये नहर आसानी से बन सके ।
6. जलाशय पहाड़ी क्षेत्र में हो ।



जहाँ पानी रोकते हैं वहाँ मछली भी डाल सकते हैं ।



बाँध के नीचे की जमीन के कुओं में पानी भी बढ़ता है ।



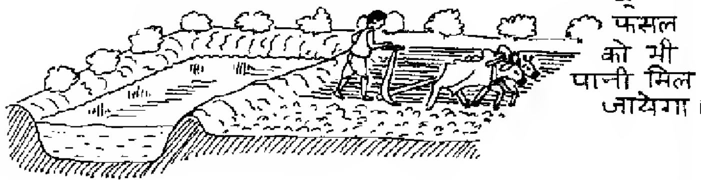
तालाब जहाँ ज़मीन गड्ढा (नीची) हो ।

मेड़ पर पेड़ लगाने से मेड मजबूत होगी ।

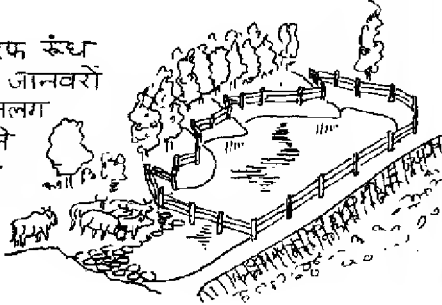


आस पास के खेतो में दूसरी फसल लें ।

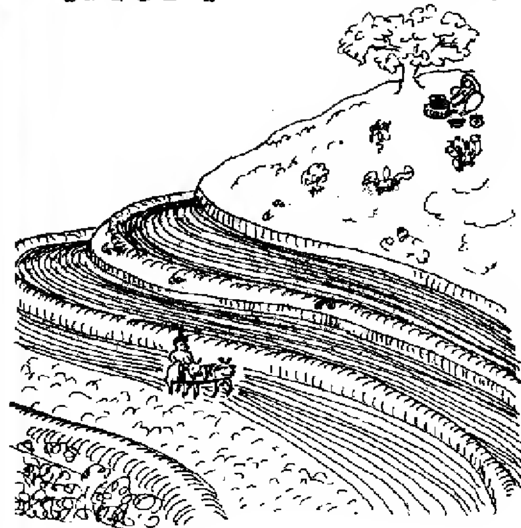
बड़े खेत का एक तिहाई हिस्सा खोद कर तालाब बना लेने से दूसरी फसल को भी पानी मिल जायेगा ।



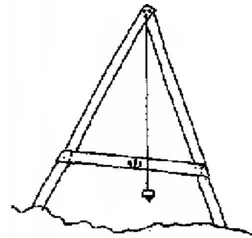
तालाब के चारों तरफ रूंध कर एक कोने में जानवरों के पीने के लिये अलग से व्यवस्था कर देने से पानी गंदा नहीं होगा और तालाब भी नहीं टूटेगा ।

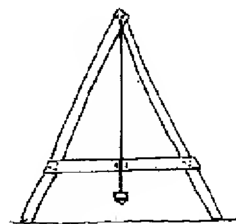


जोताई ढालू या समतल ज़मीन पर ।



ढालू ज़मीन पर कंटूर (समतल रेखा) के साथ हल जोतने से पानी ज़मीन पर रुक जायेगा और उसी में समा जायेगा ।
कंटूर बंडिंग करने से सीढ़ी-नुमा खेत भी बन सकते हैं जहाँ मेड़ पानी और मिट्टी दोनों को रोकते हैं ।





कंटूर नापने का सरल यंत्र । समतल ज़मीन पर रस्सी बीच में लटकती है ।



गरमी की जोताई बरसात के पानी को ज़्यादा सोखती है ।
फार को ज़मीन में एक बीते से अधिक जोतने से मिट्टी जल्दी सूख जायेगी ।

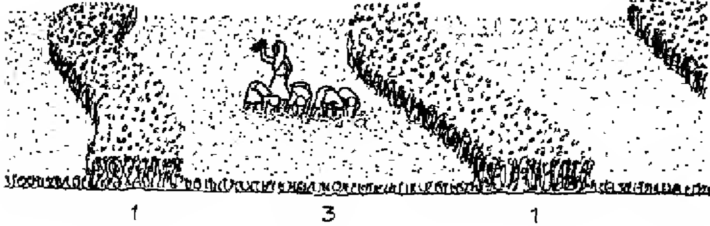


इस हल से जोतने से मिट्टी पलटती नहीं और एक हाथ की गहराई तक जोतने से पानी सोखने में आसानी होती है ।

फसल

कुछ फसलें कम पानी चाहती हैं और ज़मीन को भी सुधारती हैं।

मुख्य फसल के बीच में दूसरी फसल लीजिये। झकड़ा जड़ फसलों (कोदों, ज्वार, मक्का) के बीच में मूसला जड़ फसल (तिलहन या दलहन) लेने से पैदावार बढ़ेगी। ज्वार या बाजरा लेते हैं तो बीच में मूँगफली बोने से पानी भी बचेगा, मिट्टी का कटाव भी न होगा, और ज़मीन में नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ेगी।



फसल के बीच बीच में घास भी लगा सकते हैं या पत्तों और कूड़े से ढाँक दें। इससे ज़मीन अधिक पानी सोख पायेगी और पानी हवा में न उड़ेगा।



मिट्टी की जाँच करवाइये।



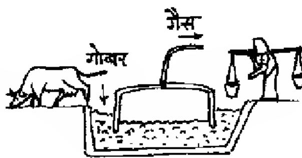
उस हिसाब से खेत में गोबर खाद और रसायनिक खाद का इस्तेमाल कीजिये।

पहली फसल (खरीफ) में ज्यादा से ज्यादा अरहर बो सकते हैं।

खरीफ में उरद या मूँग लेंगे तो दूसरी फसल (रबी) में गेहूं, चना, अलसी, सरसों, या ज्वार की अच्छी उपज मिलेगी।



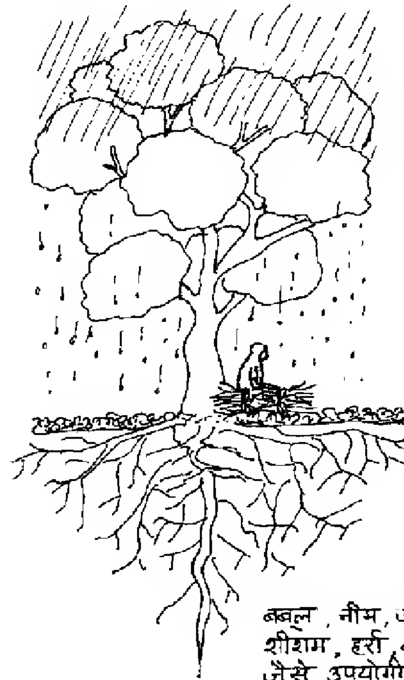
गोबर खाद की मात्रा बढ़ाने के लिये खाद गड्ढे में डालिये या गोबर-गैस में।



जंगल और चारा



जहाँ ऊबड़-खाबड़, पथरीली, और बंजर ज़मीन हो; और मेड़ों और उपजाऊ ज़मीन पर भी लगाइये।





पेड़ बरसात के तेज पानी को रोक कर धीरे धीरे जमीन पर टपकाता है।



पेड़ की सूखी टहनियाँ जलाने के काम आती हैं।

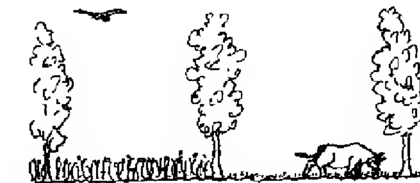


सड़े, सूखे पत्ते ज़मीन को ढाँक कर पानी को रोकते हैं।



जड़ें मिट्टी और पानी को बाँध कर रखती हैं।

बबूल, नीम, जामुन, आम, महुआ, करही, बाँस, शीशम, हर्रा, बहेरा, इमली, आँवला, पीपल जैसे उपयोगी पेड़ खूब लगाइये।



नियंत्रित चराई करवाइये।

ज़मीन के कुछ हिस्सों पर, पेड़ों के बीच, घास या चारा लगाइये जैसे कि बरसीम, एम.पी. चरी, दीनानाथ घास। चारा मिट्टी की ताकत को बढ़ाने के लिये खाद पैदा करता है। घास मिट्टी को पानी से कटने नहीं देती है।

पानी का सही उपयोग कीजिये

सलाह और सहायता के लिये :-

सरकारी विभागों से सम्पर्क करें



पटवारी
ग्राम सेवक
ग्राम सहायक
कृषि विस्तार अधिकारी
विकास खण्ड अधिकारी
सिंचाई विभाग
ग्रामीण विस्तार विकास अधिकारी
पशु चिकित्सा अधिकारी
ग्रामीण विकास अभिकरण
और **कलक्टर** से मिलिये ।

अपने से जितना हो सके उतना तो ज़रूर कीजिये ।

ग्रामीण इलाकों में गरीबी रेखा के नीचे लोगों को विशेष सहायता मिलेगी । सबसे गरीब लोगों को पहले मिलेगी – जो साल में रु. 2250 से कम कमाते हैं ।

छूट :- लघु कृषक (2½ से 5 एकड़) को 25% (चौथाई) ; सीमांत कृषक (2½ एकड़ से कम) को 33⅓% (तिहाई) ; आदिवासी, हरिजन, ग्रामीण शिल्पी को 50% (आधा) ।

स्वरोजगार के लिये ट्राइसेम में प्रशिक्षण लीजिये ।

पानी सम्बंधी राहत कार्य खुलवाइये । पशुओं को बचाइये ।
काम मांगिये । बेरोजगारों की सूची कलक्टर को दीजिये ।

बैंक अधिकारियों से मिलिये

व्यावसायिक (जैसे भारतीय स्टेट बैंक) और अन्य बैंकों (जैसे भूमि विकास बैंक, सहकारी बैंक, ग्रामीण बैंक) से व्यक्तियों और सहकारी समितियों को कर्जा मिलता है ।

10 से 14 प्रति सैंकड़ा सूद । कर्जा पाटने के लिये 3 से 14 साल का समय मिलता है ।

सहयोग और जानकारी के लिये इस पते पर पोस्टकार्ड लिखिये :-

पर्यावरण इकाई विद्युक कारखाना, अनूपपुर, शहडोल म.प्र. 484224.